दोहे

कबीरदास

कबीरदास भक्तिकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। समाज सुधारक कबीर, अपने समय में प्रचलित सभी धर्मों की अच्छाइयों को ग्रहण करके बुराइयों को खंडन करने का सफल प्रयास किया है। मन में मानवता बनाए रखने की प्रेरणा देकर आगे कबीरदास के दोहे....

जीवन-वृत्त पढ़ें।

नाम	: कबीरदास
जन्म	: 1398 ई., काशी में
रचनाएँ	: बीजक - साखी, सबद, रमैनी
विशेषताएँ	: भक्तिकाल के निर्गुण कवि अनपढ़, एकेश्वरवादी संत एवं समाज सुधारक सच्चाई को सबसे बड़े हथियार माननेवाले
देन	: जाति-पाँति, ऊँच-नीच, सामाजिक रूढ़ियाँ आदि का विरोध करके धार्मिक भेदभाव को दूर करने का आह्वान
मृत्यु	: 1398 ई., काशी में

कबीरदास के बारे में एक अनुच्छेद लिखें।

कबीरदास

भक्तिकाल के निर्गुण कवि कबीरदास का जन्म 1398 ई. में काशी में हुआ। उनकी रचना 'बीजक' साखी, सबद और रमैनी के तीन भागों में विभक्त है। कबीर अनपढ़ थे। संत कवि एवं समाज सुधारक भी थे। एकेश्वरवादी कवि कबीरदास, सच्चाई को सबसे बड़ा हथियार मानते थे। अपने समय की जाति-पाँति, ऊँच-नीच तथा अन्य सामाजिक रुढ़ियों का खंड़न करके धार्मिक भेदभाव को दूर करने का आह्वान किया। कबीर की मृत्यु 1398 ई. में मगहर में हुई।

आगे कबीरदास के कुछ दोहे देखें।

(1) **"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।**
जो दिल खोजौं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।

(1) समानार्थी शब्द दोहे से चुनकर लिखें।

बुराई	- बुरा	खोजना/ढूँढना	- खोजौं
अपना	- आपना	देखने के लिए	- देखन
मिला	- मिलिया	कोई	- कोय
हृदय	- दिल	मैं जैसा	- मुझ-सा

(2) कबीरदास किसकी खोज में निकला?

कबीरदास बुरा व्यक्ति की खोज में निकला।

(3) कबीरदास की राय में सबसे बुरा कौन है?

अपने में जो कुछ बुरा है उसे छिपाकर, दूसरों की बुराई ढूँढनेवाले लोग कबीरदास की राय में बुरा है।

HSSLIVE.IN

(4) अपने दिल खोजने में कबीरदास ने क्या समझा?

अपने दिल खोजने पर कबीरदास ने समझा कि उनसे बुरा और कोई व्यक्ति नहीं है।

(5) 'जो दिल खोजौं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय'– कबीर ने ऐसा क्यों कहा?

हर मनुष्य में भलाई और बुराई- दोनों होना संभव है। लेकिन वह अपनी बुराई को छिपाकर दूसरे लोगों को बुरा दिखाकर, अपने को स्वयं अच्छे दिखाते है। दूसरों की बुराइयों को छोडकर स्वयं पहचानने पर वह ज्ञानी बन जाता है।

(6) सच्चे ज्ञानी कौन हो सकता है?

अपने को स्वयं पहचाननेवाला व्यक्ति सच्चे ज्ञानी हो सकता है।

(7) इस दोहे का तत्व क्या है?

अपने को पहचाननेवाला सच्चा ज्ञानी है।

(8) दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी दोहाओं में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

कबीरदास कहते हैं – जब मैं दूसरों व्यक्तियों में बुराई ढूँढने निकला तो कोई भी बुरा व्यक्ति नहीं मिला। जब मैं अपने दिल में खोजा अर्थात आत्मनिरीक्षण करने पर पता चला कि मुझ से ज़्यादा बुरा और कोई नहीं।

(2) लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि।।

(1) समानार्थी शब्द दोहे से चुनकर लिखें।

सादगी	- लघुता	दूर	- दूरि
विनम्रता	- प्रभुता	धूलि	- धूरि
ईश्वर	- प्रभु	चीनी	- शक्कर

(2) महत्व कैसे मिलते है?

विनम्रता से महत्व मिलते है।

HSSLIVE.IN

(3) महत्व मिलने से क्या फ़ायदा है?

मन में जो अहं का भाव है, वह नष्ट हो सकता है।

(4) ईश्वर प्राप्ति कब हो सकती है?

जब हम विनम्र और सरल होते हैं, तभी ईश्वर प्राप्ति हो सकते है।

(5) अहंकार कैसे दूर हो जाते है?

विनम्र और सरल जीवन बिताने से अहंकार दूर हो जाते हैं।

(6) हाथी और चींटी के सिर पर क्या-क्या है?

हाथी के सिर पर धूलि और चींटी के सिर पर शक्कर है।

(7) हाथी और चींटी किन-किन के प्रतीक है?

हाथी बड़ा होकर भी अहंकार का प्रतीक है। चींटी सबसे छोटा होकर भी लालित्य और विनम्रता का प्रतीक है।

(8) इस दोहे का तत्व क्या है?

जीवन की शांति सादगी में है।

(9) ' जीवन की शांति सादगी में है ' - इस तत्व के समर्थन केलिए कबीरदास किन-किन उदाहरणों को स्वीकार किए हैं?

चींटी और हाथी।

(10) दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

ललित जीवन बिताने पर ज़ोर देते हुए कबीरदास कहते है कि सादगी से विनम्रता मिलती है। विनम्रता से अहंकार नष्ट होते है। हम जितने सरल और ललित जीवन बिताते है, ईश्वर उतने अधिक हमारे पास आते है। मन में अहंकार होने पर ईश्वर भी हमें छोडकर दूर हो जाते है। इसके समर्थन केलिए कबीरदास ने चींटी और हाथी के उदाहरण का सहारा लिया है। आकार में सबसे छोटा होकर भी चींटी अपने सिर पर शक्कर लेकर चलता है। उनमें अहंकार नहीं है। वह विनम्रता का प्रतीक है। लेकिन हाथी बडा होकर भी सिर पर सिर्फ धूली है। बडे होने का गर्व उनमें ज़्यादा है।

लालित्य एवं विनम्र जीवन बिताने की प्रेरणा देते हुए कबीरदास कहते है कि विनम्रता में मनुष्य का महत्व सौगुणा बढ़ता है।

(3) दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करैं न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।

(1) समानार्थी शब्द दोहे से चुनकर लिखें।

स्मरण	- सुमिरन	कोई	- कोय
करता है	- करै	क्यों	- काहे
होता है	- होय		

(2) मनुष्य कब ईश्वर की स्मरण करता है?

दुख के अवसर पर मनुष्य ईश्वर की स्मरण करता है।

(3) सुख में ईश्वर की स्मरण करने से क्या फ़ायदा है?

जीवन में कभी भी दुःख नहीं होता।

(4) दुःख को दूर रखने केलिए क्या करना है?

सुख के अवसर पर भी ईश्वर की स्मरण करना है।

(5) इस दोहे के तत्व क्या है

ईश्वर स्मरण का महत्व।

(6) दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

ईश्वर स्मरण के महत्व पर ज़ोर देते हुए कबीरदास कहते है कि सुख के अवसर पर ईश्वर का स्मरण करने से जीवन में दुख नहीं होता। जीवन में दुःख का अनुभव करते समय लोग ईश्वर की स्मरण करते है। लेकिन सुख के अवसर पर वे ईश्वर का नाम भूल सकते है। दुःख से बचने केलिए ईश्वर की कृपा-कटाक्ष अनिवार्य है। ऐसे लोगों से कबीरदार पूछते हैं कि सुख के अवसर पर भी ईश्वर स्मरण करने से दुःख क्यों होता है। इससे जीवन से दुःख सदा दूर रहेगा।

ईश्वर की याद करने की प्रेरणा देते हुए कबीरदास कहते है कि जीवन में दुःख एवं सुख के अवसर में ईश्वर हमारे साथ होना है।

(4) कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय।।

(1) सामानार्थी शब्द दोहे से ढुँढकर लिखें।

लोभी	- लालची	शूर	- सूरमा
वर्ण	- बरन	खोकर	- खोय
इनसे	- इनते	से	- ते

DO NOT COPY

(2) सच्चे शूर कैसे बनते हैं?

जाति, वर्ण और कुल का मोह को त्याग करने से सच्चे शूर बनते हैं।

(3) किन-किन से भक्ति नहीं होती?

काम, क्रोध एवं लोभ से भक्ति नहीं होती।

(4) इस दोहे का तत्व क्या है?

समभाव शूर का लक्ष्ण है।

(5) दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

बुरी वासनाओं से दूर रहने का उपदेश देते हुए कबीरदास कहते हैं कि काम, क्रोध और लोभ, ऐसे बुरी वासनाओं से भक्ति नहीं होती। भक्ति तो कोई भी निराला शूर कर सकता है, जिसने जाति, वर्ण, कुल आदि का मोह त्याग दिया हो। सच्चे भक्त का मन काम, क्रोध, लोभ आदि बुरी वासनाओं से दूर रहते है।

अतः भक्ति में जाति-पाँति या वर्ण का कोई स्थान नहीं है। ईश्वर के सामने सब एक समान है।

(5) साई इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

(1) समानार्थी शब्द दोहे से ढूँढ़कर लिखे।

ईश्वर - साई
परिवार - कुटुंब
संत - साधु
जिसमें - जामे
संभाला - समाय

(2) कबीरदास ईश्वर से क्या प्रार्थना करते है।

कबीरदास ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि, मुझे इतना ही धन या धान्य दीजिए जिससे अपने परिवार का देखभाल आसानी से करें।

(3) इस दोहे का तत्व क्या है?

अपने पास जो कुछ है, उसमें ही खुश होना चाहिए।

(4) दोहे का भावार्थ लिखें।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ संत कवि थे। अनपढ़ होकर भी देशाटन और साधु-संतों के संपर्क से वे बडे ज्ञानी बन गए। कबीरदास अपने समय में

प्रचलित अनाचार और अंधविश्वासों का खुला खंडन किया। उनकी प्रामाणिक रचना 'बीजक' है, जिसके तीन भाग है - साखी, सबद और रमैनी। उनकी कविता में गुरु-सेवा, नाम-महिमा, सत्संग, भक्ति, समाज-सुधार आदि भावों का समन्वय विद्यमान है।

कबीरदास ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि - हे ईश्वर, आप मुझे इतना ही धान्य या धन दीजिए जिससे अपने परिवार आसानी से सँभाल करें। साथ ही घर में कोई अतिथि आएँ तो उसको भी ज़रा कुछ देना है।

धन हो या धान्य, ज़्यादा अधिक होने से कोई फायदा नहीं। ये सब हमें दुःख की ओर खींचते है।

HSSLIVE.IN

अनुवर्ती कार्यः-

➢ समानार्थी शब्द दोहे से ढूँढ लें।

कोई	- कोय	शूर	- सूरमा
संभाला	- समाय	ढूँढना	- खोजौं
धूलि	- धूरि	वर्ण	- बरन
स्मरण	- सुमिरन	क्यों	- काहे
मिला	- मिलिया		

➢ समान आशयवाला चरण दोहे से चुन लें।

- दूसरा कोई भूखा न रहे।
  साधु न भूखा जाय।
- सुख में कोई स्मरण नहीं करता।
  सुख में करै न कोय।
- मैं बुरे लोगों को ढूँढने निकला।
  बुरा जो देखन मैं चला।
- हाथी के सिर पर धूलि है।
  हाथी के सिर धूरि।
- काम, क्रोध और लालच से भक्ति नहीं होती।
  कामी, क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।

➢ समान आशयवाला चरण दोहे से चुन लें।

- दूसरा कोई भूखा न रखा।
  साधु भी भूखा जाय।
- सुख में कोई स्मरण नहीं करता।
  सुख में करै न कोय।
- मैं बुरे लोगों को ढूँढने निकला।
  बुरा जो देखन मैं चला।
- हाथी के सिर पर धूलि है।
  हाथी के सिर धूरि।
- काम, क्रोध और लालच से भक्ति नहीं होती।
  काम क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय।

DO NOT COPY

➢ व्याख्या करें- "साई इतना दीजिए, जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।"

कबीरदास साधु जैसा जीवन बिताते हैं। कबीरदास ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान, मुझे उतना ही धन अथवा अन्न दीजिए जिससे मैं अपना परिवार संभाल सकें। साथ ही वे अपने घर में आनेवाले अतिथियों को भी ज़रा कुछ देना चाहता हैं।

सादगी या लालित्य से जीवन में शांति मिलेगा।

➢ ये तत्व किन-किन दोहों से संबंधित है?

- अहं दूर होने से महत्व बढ़ता हैं। - दोहा 2
- सुख और दुख में स्मरण करना हैं। - दोहा 3
- अपने को पहचाननेवाला सच्चा ज्ञानी है। - दोहा 1
- जीवन की शांति सादगी में हैं। - दोहा 5
- समभाव शूर का लक्ष्ण हैं। - दोहा 4

➢ 'जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय'- अपना विचार प्रकट करे।

कबीरदास की प्रस्तुत पंक्ति एक बड़े तत्व की ओर हमें खीचता है। लोगों में एक आदत हैं कि अपने जीवन में कष्टता आने पर या जीवन में दुःख झेलने पर मंदिर-मस्ज़िद जाते हैं और खूब ईश्वर की प्रार्थना करती है। लेकिन सुख के अवसर पर ये लोग ईश्वर के बारे में नहीं सोचता।

ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुए कबीरदास पूछते हैं कि यदि सुख में भी ईश्वर का स्मरण करें तो दुःख कैसे हो सकते हैं? अर्थात सुख के अवसर में भी ईश्वर स्मरण करें तो दुःख कभी भी होगा।

➢ 'कबीरदास की रचनाएँ कालजयी एवं प्रासंगिक है'- इस विचार से जुडे दोहों का संकलन करके प्रस्तुत करें।

'कबीरदास की रचनाएँ कालजयी एवं नित-प्रासंगिक हैं'-इस में कोई संदेह नहीं। कबीरदास एक संत कवि थे, जो तेरहवीं शताब्दी में जीवित थे। अनपढ़ होकर भी हिंदी साहित्य और समाज केलिए उन का देन सर्वेत्तम रहा।

ऐसे कुछ दोहे पढ़ें।

(1) **साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।**
सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।।

अर्थः संसार में ऐसे सज्जनों की ज़रूरत है जैसे अनाज साफ करनेवाला सूप होता हैं। जो सार्थक को बचा लेंगे और निरर्थक को उड़ा देंगे।

(2) **पोथि पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।**
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

अर्थः बड़े-बड़े पुस्तक पढ़कर संसार में कितने ही मृत्यु के द्वार तक पहुँच गए, पर सभी विद्वान न हो सकें। कबीर मानते हैं कि 'प्रेम' का ढाई अक्षर पढ़े अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचानता तो वही सच्चा ज्ञानी होता है।

DO NOT COPY

(3) **कल करै सो आज करैं, आज करै सो अब।**
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगो कब।।

अर्थः जो कल करना है उसे आज करो और जो आज करना है उसे अभी करो। जीवन बहुत छोटा होता हैं। अगर पल भर में समाप्त हो गया तो क्या करेगे।

(4) **जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।**
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।
अर्थः सज्जनों की जाति न पूछना चाहिए, उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तल वार का मूल्य होता है न कि उसकी म्यान का।

HSSLiVE.IN

(5) अति का भला बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।
अर्थः न तो अधिक बोलना अच्छा है, न ही ज़्यादा चुप रहने की ज़रूरत भी नहीं। जैसे अधिक वर्षा भी अच्छी नहीं हैं और बहुत अधिक धूप भी अच्छी नहीं हैं।

।।।।।।।।।।।।।।।।।

DO NOT COPY